

संस्कृत

कोश

भारत पत्र



(1)

अधः पुमान् ॥ ३७ ॥ अवलोकनात्स्यदीधिकाविकृष्टकं ॥ अपांगदेशो निर्याने कर्णमूलं तु कलिको ॥ ३८ ॥ अधः  
अतिमानमधोस्पयत् ॥ आसनं च धदेशः स्यात्पथे के विंदुजालकं ॥ ३९ ॥ पक्षभोगः पार्श्वभागो दनभागस्तु यो  
य एव पञ्चाक्षं वादिदेशो गोत्रावरेकमात्रं ॥ ४० ॥ तोत्रैवैकमालो न वंधस्तं नैयष्ट्यलं ॥ अंडको निगडो स्त्री स्यादंडु  
स्त्री पृथो द्वयोः ॥ ४१ ॥ इष्या कक्षावरत्रो स्यात्कल्पना सज्जनो समो ॥ प्रवेशपास्तरां वरगः परिस्तो मुः कुचो द्वयोः ॥ ४२ ॥ वीतं व  
रहस्यं वारी तु गजबंधिनी ॥ छोटके पीतितुरगं तु रंगाश्वतुरंगमाः ॥ ४३ ॥ वाजिवाहवर्गं धर्वह्यसैधवमप्ययः ॥  
जलेया कुलीनाः सुर्विनीताः साधुवाहनः ॥ ४४ ॥ वानायुजाः पारसीकाः कावोजां कात्तिको ह्याः ॥ यजुरस्वोऽश्वमेधः ॥  
ज्वनं तु जवाधिकः ॥ ४५ ॥ यूष्ठाः स्थोरी सितः कर्को रथो वाह्य रथस्ययः ॥ बालः किशोरो वाम्यश्वावडे वा वाडे वंगरो ॥ ४६ ॥  
अस्त्रास्त्री नैयदस्वेन दिने नैके न गम्यते ॥ कथं तु मधमश्वा न हि षड्विधो बनिस्त्वेन ॥ ४७ ॥ निगोलं तु गलो देशे वंदेत्स्त्री  
धमावड उर ॥ आत्मेचित्तधोरितं करे चित्तं वलितं प्लुतं ॥ ४८ ॥ गतयोऽम्रः पंचधोरा वारा तु प्रोथमं स्त्रियाम् ॥ कविकांतं व  
वदः ३

द्वितीयांशः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ मन्तगजौ मजौ नागः कुंजरौ वारणाः करौ ॥ ३४ ॥ ३

(2)

तत्तत् ॥ २४ ॥ नाथं च त्रिषुषु प्रधारणा तु समर्थनं ॥ अपवादं स्तुतिर्देशो निदेशः शासनं वसः ॥ २५ ॥ शिष्टिश्चोच्चावसंस्थानुमं  
दाधारणास्थितिः ॥ आगोऽपराधो मनुष्यसमेतदानबंधने ॥ २६ ॥ द्विषोद्यौदगुणोद्वेगोऽत्रागद्वेषः करोवलिः ॥ चमदि  
प्रशुक्तौऽस्त्रीप्राज्ञतंतुप्रदेशने ॥ २७ ॥ उपायनमुपग्राह्यमुपहारं तथोपदा ॥ योतकादिनुपदिशंदायोहरांचत ॥  
२८ ॥ तत्कालं स्तुतदावंसात्प्रायतिः ॥ कालं उत्तरं ॥ सांख्यिकं फलं सस्वधं उदकं फलं उत्तरं ॥ २९ ॥ अदोष्टवान्नेया  
देष्टव्यं स्वपस्वक्रजं ॥ महीभुजौ महिजेयं स्वपक्षप्रभवं मयं ॥ ३० ॥ प्रक्रियात्वं धिकारः स्वाध्यामरंतुप्रकीर्तन  
॥ शासनं यत्तद्भवासनं सिंहासनं च तत् ॥ ३१ ॥ हेमं छत्रं त्वातपत्रं राज्ञं स्तुनपलं तत् ॥ भद्रकुंभः पूराकुंभः  
॥ लका ॥ ३२ ॥ निवेशः पाविर्दंष्ट्रं सज्जनं तत्परस्तरां ॥ हस्त्यश्वरथपादातं सेनागं स्वाच्चतुष्टयं ॥ ३३ ॥ ३  
॥ नाथं नाथं स्तुयथयः ॥ मद्योक्तो मदकलः कलभः करिषावकः ॥ ३४ ॥ प्रमिनो मजितो मत्तः स  
॥ स्मिकं गजतादं देकरिणां वनकावशा ॥ ३५ ॥ गंडः क्रोमदो दानं वमथुः करिषीकरः ॥ कुंभो कथं

गलमला २ वउहर २ अनस २ हिजल ३ कद्वरि ७ निवध २ अगर ३ अगरे २ सात २ च्या ३ वकुल २ साडिम २ नागकेसर ७ जेत ५ अमेष ५

परिवा ३ लकु ३ लिकु ३ वीड ३ ॥ ६२ ॥ पणसः कंठकि फलो निचुलो हिजलो ३ वु ३ जः ॥ का कोदुंवरिका फल्गुमिल ३ ज ३ वनेफ  
भद्र हिगुनियसि मालका ॥ ६३ ॥ यचुमर्द ३ स्तनिव ३ पिबिला ३ गुह ३ शिंशया ३ ॥ कायला ३ भ ३ मग ३ नी ३ सा ३ रा ३ रिष ३ लुकपीतन ॥ ६४ ॥ भांडी ली ३ य  
मपुष्पकः ॥ ६५ ॥ एतस्पकलि कागध फली ३ स्पाद ३ थके ३ सेरे ३ वकु ३ लो ३ वं ३ जु ३ लो ३ ३ थोके ३ स ३ मो ३ क ३ र ३ क ३ दा ३ डि ३ मो ॥ ६६ ॥ गयेय ३ के ३ से ३ रो ३ ना ३ ग ३ के ३ से ३ र  
जया ३ जयं ३ ती ३ त ३ की ३ री ३ ना ३ दे ३ य ३ वि ३ जयं ३ ती ३ का ॥ ६७ ॥ श्री ३ प ३ र्ण ३ म ३ नि ३ मं ३ य ३ स्पा ३ क ३ शि ३ का ३ ग ३ रि ३ का ३ रि ३ का ॥ ज ३ यो ३ थ ३ कु ३ ठ ३ जः ३ थ ३ को ३ व ३ त्स ३ को ३ भि  
एतस्पेवक ३ लि ३ गे ३ इ ३ यं ३ व ३ म ३ इ ३ यं ३ वं ३ फ ३ ले ॥ ६८ ॥ अ ३ प ३ या ३ क ३ फ ३ ला ३ वि ३ न ३ रु ३ वे ३ रा ३ ३ क ३ र ३ म ३ दे ३ के ॥ ६९ ॥ का ३ ल ३ त्कं ३ ध ३ स्त ३ म ३ ल ३ स्पा ३ ता ३ पि ३ खा ३ य ३ थ ३ सि ३ न्दु ३ क  
सुर ३ सो ३ नि ३ गु ३ डी ३ दा ३ रि ३ का ३ के ३ त्प ३ पि ॥ ७० ॥ वि ३ लो ३ ग ३ र ३ दि ३ व ३ ता ३ लो ३ जी ३ म ३ त ३ इ ३ य ३ पि ॥ श्री ३ हि ३ सि ३ नी ३ लु ३ पु ३ उ ३ डी ३ त्प ३ रा ३ न्यं ३ तु ३ म ३ नि ३ का ॥ ७१ ॥ भ ३ पु ३ दी ३ पी ३ ति ३ भ  
ता ३ व ३ नो ३ द्वा ॥ थो ३ फ ३ ला ३ का ३ तु ३ सु ३ व ३ हा ३ नि ३ गु ३ डी ३ ली ३ का ३ व ३ सा ॥ ७२ ॥ सि ३ ता ३ सो ३ ख ३ व ३ त ३ सु ३ र ३ सा ३ भू ३ त ३ वे ३ थ ३ मा ३ ग ३ धी ॥ ग ३ रि ३ का ३ प्र ३ थ ३ का ३ व ३ का ३ सा ३ य  
मपुष्पिको ॥ ७३ ॥ अ ३ ति ३ पु ३ र्त ३ पु ३ ड्क ३ स्पा ३ दा ३ सं ३ ती ३ मा ३ ध ३ वी ३ ल ३ ता ॥ सु ३ म ३ नी ३ म ३ ल ३ ती ३ जा ३ ति ३ स ३ स ३ ल ३ न ३ च ३ म ३ लि ३ का ॥ ७४ ॥ क ३ र ३ व ३ को ३ उ ३ र ३ गे ॥ धी ३ ता ३ क ३ र ३ व ३ को ३ मि ३ टी ३ त ३ स्मि ३ स ३ ह ३ च ३ री ३ इ ३ यो ॥ ७५ ॥ ओ ३ व  
पत्नी ॥ प्र ३ ति ३ हा ३ स ३ रा ३ न ॥ प्रा ३ स ३ चं ३ डा ३ त ३ ह ३ य ३ मा ३ र ३ का ॥ ७६ ॥ क ३ र ३ वी ३ रे ३ क ३ री ३ इ ३ त्क ३ क ३ र ३ ग्रं ३ थि ३ ला ३ कु ३ भो ॥ उ ३ म  
गोरवा ७ इ ३ य ३ व ३ क ३ री ३ रा ३ ३ म ३ ल ३ ३ मे ३ रा ३ डि ३ ग ३ नि ३ आ ३ री ७

करीरादित्रीणिमरुदेशस्य कंठाकिन पीते ३  
मरुतुष्टयस्य



(5)

संमिति संसदः। आस्थानी कीर्तमास्थानं स्त्रीनपुंसकयोः संसदः॥ १५॥ प्राग्वत् प्राग्वत् वै हरेः ॥ विदिताः  
संस्ताराः सन्धाः समाजिकां पवते॥ १६॥ अर्धयुक्तं होतारं च जु. सामं विदः ॥ १७॥ जीध्री  
जौ याजकां पवते॥ १८॥ वेदिः परित्कृता भूमिः समेत् स्थितिं च त्वरे॥ चाबालौ पपकः ॥ कुंगो सुगहना व  
निर्मथ्य दासु रित्तरं हि योः॥ दक्षिणाग्निं गार्हपत्या हवनीयो त्रयोऽग्नयः॥ १९॥ अग्नित्रयं भिदनेतो  
लः॥ समस्तः परिचाय्योपचाय्यो विग्नो प्रयोगिनः॥ २०॥ योगार्हपत्या दानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते।  
याग्निर्वायौ स्वाहा च हुतमुक्थि यो॥ २१॥ संस्तमवनी धार्यो च दास्यादग्निं समिधये॥ गायत्री प्रारंभं दौ  
मानः॥ २२॥ आग्निं सोतां प्रेतो प्रेयाही रं स्याद्विद्योगतः॥ धवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मगचर्मणा॥ २३॥  
दध्यं ज्येष्ठेऽन्नं तु पायसं॥ हव्यं नव्यं देवायि र्येऽन्नं पोत्रं सुवादि कं॥ २४॥ पुष्यं च नृणां गीतं नृवां नैदाः सु  
पाकते ॥ २५॥ अग्निं च त्रैलोक्यं तौ हतः॥ २६॥ परंपरा कं रामनं प्रोच्यो रं च वधार्य कं॥ वाच्यालिं गाः प्रमीतोपसंपन्न प्रोक्षितो

अर्घ्यजले अर्घ्यं पारार्थपाद्यं ५

प्राज्यं<sup>२</sup> नतो<sup>१</sup> नृषु वषट्के<sup>३</sup> ॥ दीक्षांतो<sup>१५</sup> कन्दे<sup>१५</sup> यो<sup>१५</sup> यज्ञो<sup>१५</sup> तत्कर्म<sup>१५</sup> हितयसि<sup>१५</sup> ॥ २० ॥ त्रिष्वयं<sup>१५</sup> कृतु<sup>१५</sup> कर्म<sup>१५</sup> द्रु<sup>१५</sup> नैवा<sup>१५</sup> तदिक<sup>१५</sup> मरि<sup>१५</sup> ॥  
वेसो<sup>१५</sup> विवस<sup>१५</sup> ॥ जनपा<sup>१५</sup> यो<sup>१५</sup> ॥ २१ ॥ त्यागो<sup>१५</sup> विहा<sup>१५</sup> पितं<sup>१५</sup> दानं<sup>१५</sup> मु<sup>१५</sup> त्सर्जन<sup>१५</sup> विमर्जनं<sup>१५</sup> ॥ विश्रा<sup>१५</sup> नो<sup>१५</sup> विसरं<sup>१५</sup> स्पर्शनं<sup>१५</sup> प्रतिपा<sup>१५</sup>  
शनं<sup>१५</sup> निर्वपणं<sup>१५</sup> पवर्जनं<sup>१५</sup> महति<sup>१५</sup> ॥ अतार्थं<sup>१५</sup> तदहर्द्धनं<sup>१५</sup> त्रिषु<sup>१५</sup> स्वा<sup>१५</sup> दो<sup>१५</sup> द्वौ<sup>१५</sup> हुकं<sup>१५</sup> ॥ २० ॥ पितृदानं<sup>१५</sup> निवा<sup>१५</sup> यः<sup>१५</sup> स्पा<sup>१५</sup> श्रु<sup>१५</sup> तत्क<sup>१५</sup>  
चो<sup>१५</sup> र्यमा<sup>१५</sup> सि<sup>१५</sup> ॥ २१ ॥ अमो<sup>१५</sup> न्हः<sup>१५</sup> कुते<sup>१५</sup> पो<sup>१५</sup> ॥ त्रिषु<sup>१५</sup> ॥ २२ ॥ अथै<sup>१५</sup> घरा<sup>१५</sup> यरी<sup>१५</sup> द्वि<sup>१५</sup> चो<sup>१५</sup> चो<sup>१५</sup> घरा<sup>१५</sup> चो<sup>१५</sup> वे<sup>१५</sup> घरा<sup>१५</sup> ॥ मो<sup>१५</sup> न्हस्व<sup>१५</sup> ध्ये<sup>१५</sup> घरा<sup>१५</sup> यं<sup>१५</sup>  
वनी<sup>१५</sup> धनो<sup>१५</sup> ॥ २३ ॥ षट्सु<sup>१५</sup> त्रिषु<sup>१५</sup> ध्ये<sup>१५</sup> म<sup>१५</sup> वा<sup>१५</sup> र्थपा<sup>१५</sup> द्यो<sup>१५</sup> पा<sup>१५</sup> द्यो<sup>१५</sup> वा<sup>१५</sup> रितं<sup>१५</sup> ॥ कर्म<sup>१५</sup> दो<sup>१५</sup> ति<sup>१५</sup> श्रु<sup>१५</sup> ति<sup>१५</sup> यो<sup>१५</sup> वा<sup>१५</sup> ति<sup>१५</sup> य्य<sup>१५</sup> र्थ<sup>१५</sup> ॥ २४ ॥ साधु<sup>१५</sup> ति<sup>१५</sup>  
शिकं<sup>१५</sup> आगै<sup>१५</sup> तुर<sup>१५</sup> ति<sup>१५</sup> थि<sup>१५</sup> न<sup>१५</sup> ग<sup>१५</sup> हा<sup>१५</sup> गते<sup>१५</sup> ॥ पूजा<sup>१५</sup> नम<sup>१५</sup> स्पा<sup>१५</sup> य<sup>१५</sup> चि<sup>१५</sup> तः<sup>१५</sup> नम<sup>१५</sup> र्थ<sup>१५</sup> चि<sup>१५</sup> ह<sup>१५</sup> रणो<sup>१५</sup> म<sup>१५</sup> र्माः<sup>१५</sup> ॥ २५ ॥ वारि<sup>१५</sup> व<sup>१५</sup> स्पा<sup>१५</sup> तु<sup>१५</sup> य<sup>१५</sup>  
पा<sup>१५</sup> सनं<sup>१५</sup> ॥ वज्रा<sup>१५</sup> वा<sup>१५</sup> द्यो<sup>१५</sup> प<sup>१५</sup> र्य<sup>१५</sup> दनं<sup>१५</sup> चो<sup>१५</sup> र्थ<sup>१५</sup> ती<sup>१५</sup> र्थ<sup>१५</sup> पि<sup>१५</sup> थ<sup>१५</sup> स्थि<sup>१५</sup> तिः<sup>१५</sup> ॥ २६ ॥ उप<sup>१५</sup> स्पा<sup>१५</sup> यी<sup>१५</sup> स्त्वा<sup>१५</sup> च<sup>१५</sup> म<sup>१५</sup> न<sup>१५</sup> म<sup>१५</sup> र्थ<sup>१५</sup> मो<sup>१५</sup> न<sup>१५</sup> म<sup>१५</sup> भा<sup>१५</sup> य<sup>१५</sup>  
या<sup>१५</sup> दो<sup>१५</sup> त<sup>१५</sup> स्पा<sup>१५</sup> रि<sup>१५</sup> पा<sup>१५</sup> दी<sup>१५</sup> अनु<sup>१५</sup> कर्म<sup>१५</sup> ॥ २७ ॥ पर्या<sup>१५</sup> यं<sup>१५</sup> र्वा<sup>१५</sup> ति<sup>१५</sup> पा<sup>१५</sup> तं<sup>१५</sup> सु<sup>१५</sup> स्पा<sup>१५</sup> त्प<sup>१५</sup> र्य<sup>१५</sup> यं<sup>१५</sup> उ<sup>१५</sup> पा<sup>१५</sup> त्प<sup>१५</sup> यः<sup>१५</sup> ॥ नियमो<sup>१५</sup> व्रतं<sup>१५</sup> म<sup>१५</sup> स्त<sup>१५</sup>  
उ<sup>१५</sup> प<sup>१५</sup> व<sup>१५</sup> ॥ २८ ॥ उप<sup>१५</sup> व<sup>१५</sup> र्त्तनं<sup>१५</sup> य<sup>१५</sup> वा<sup>१५</sup> हो<sup>१५</sup> दि<sup>१५</sup> वे<sup>१५</sup> कः<sup>१५</sup> ए<sup>१५</sup> थ<sup>१५</sup> ग<sup>१५</sup> म<sup>१५</sup> ता<sup>१५</sup> ॥ स्पा<sup>१५</sup> द्वा<sup>१५</sup> वे<sup>१५</sup> र्त्तनं<sup>१५</sup> त<sup>१५</sup> वा<sup>१५</sup> य<sup>१५</sup> न<sup>१५</sup> हि<sup>१५</sup> र्वा<sup>१५</sup> ज<sup>१५</sup> निः<sup>१५</sup> म<sup>१५</sup>

(7)

वक्रः ४

सर्वोत्तमो जनिः ॥ उदयातुपिपासात् दूतैर्षां जग्धिंस्तु भोजनं ॥ ५५ ॥ जेमनं लेपं आहारो भिन्नसो न्यादं ॥ ५६ ॥ गोपे गोपाल गोसंव्यते धुर्गभीर  
नैर्षात्तः फेलाभुक्त समुद्रितं ५६ ॥ कामं प्रकामं पर्याप्तं निरामेष्टं पथे पित्तं ॥ गोपे गोपाल गोसंव्यते धुर्गभीर  
वज्रदा ॥ ५७ ॥ गोमहिष्यादिकं पादे वृद्धनं स्यात् ऊवीश्वरे ॥ गोमा गोमी गोकुलं तु गोधनं स्यात् ऊवां वजे ॥ ५८ ॥ त्रिधा सितं  
उदीनं तद्रावोपरी सितं पुरा ॥ उसा भद्रा वलीवर्द क्रय भौवष भौवषः ॥ ५९ ॥ अनङ्गान् सौरनेयों गौरुत्तं संहतिरो  
सकं ॥ गमा गोत्रा गवां वत्सधे नो वीत्सक धेनुकं ॥ ६० ॥ दधो महान्महोत्तः स्याद् दधोत्तं तु जर ऊवः ॥ उत्पन्नं राजा ॥ ६१ ॥  
लोत्तः सद्योजातं तु तत्सकं ॥ ६२ ॥ शकत्करिस्तु वत्सः स्याद् दधो वत्सोत्तरो समौ ॥ आर्धभ्यः षडता योग्यः षडो गोपातं रिद  
॥ ६३ ॥ स्कंधप्रदेशं तु वहः सात्तानुगलकं वलः ॥ स्यात्तं सितं तु नृस्योतः प्रखवाङ्गु गपार्थकः ॥ ६४ ॥ युगादीनां  
तु बोधो योग्यप्रासं म्यशकटाः ॥ स्वनतिते न तद्दोहो ॥ स्पंदहलिक सेरिकौ ॥ ६५ ॥ पूर्वहं धुर्यधोरेयधुरीणां स्तधुरंध  
राः ॥ उभावेकधुरीणौ कधुरावेकधुरावहे ॥ ६६ ॥ हं गीत्यां नृमा गोघुने चिकी ॥ वरणिदिने दात्संज्ञाः स्युः पावनी धवलो

अर्जुन धारो

(8)

लेमनं तु नि<sup>२</sup>हानं त्रिलिंगा<sup>५</sup>विमितावधेः ॥ ४४ ॥ फला<sup>३</sup>कृतं नृदि<sup>३</sup>त्रं च शल्यं<sup>३</sup>मुख्यं तु<sup>३</sup>पेठं ॥ प्रणीतमुपसंपन्नं प्रशस्तं<sup>३</sup>स्वा<sup>३</sup>त्तु  
संस्कृतं ॥ ४५ ॥ स्यात्पिच्छं तु विजलं संप्रष्टं बोधितं समे ॥ चिकुरां मसरां स्निग्धं तु<sup>३</sup>त्येभा<sup>३</sup>वेवा<sup>३</sup>सते ॥ ४६ ॥  
पक्वं यौलि<sup>५</sup>रभ्य<sup>३</sup>षोला<sup>३</sup>जोः पुंभूति<sup>३</sup>चांसतोः ॥ पृथुकः स्याच्चिपिटको<sup>३</sup>धानो<sup>३</sup>भ्रष्ट<sup>३</sup>यवे<sup>३</sup>स्त्रियः ॥ ४७ ॥ पयोः<sup>३</sup>पयः<sup>३</sup>  
धकः स्यात्करं भोदधिसक्तवः ॥ प्रिस्ता<sup>३</sup>स्त्री<sup>३</sup>कर्म<sup>३</sup>धो<sup>३</sup>नमोद<sup>३</sup>नो<sup>३</sup>स्त्रीसदी<sup>३</sup>दिवः ॥ ४८ ॥ नि<sup>३</sup>सिदा<sup>३</sup>दधिका<sup>३</sup>सर्वर  
साये<sup>३</sup>मंडे<sup>३</sup>मस्त्रियां ॥ मासरां<sup>३</sup>चामनि<sup>३</sup>स्त्रावां<sup>३</sup>मरोडे<sup>३</sup>भक्त<sup>३</sup>समुद्रवे ॥ ४९ ॥ यवा<sup>३</sup>गुरु<sup>३</sup>श्लिका<sup>३</sup>श्राणा<sup>३</sup>विलेपी<sup>३</sup>तर<sup>३</sup>स्मा<sup>३</sup>लान्त  
गुरुं<sup>३</sup>त्रिभुगवां<sup>३</sup>सर्वगतो<sup>३</sup>विज्ञो<sup>३</sup>मय<sup>३</sup>मस्त्रियां ॥ ५० ॥ तदि<sup>३</sup>भुक्<sup>३</sup>करीषो<sup>३</sup>स्त्री<sup>३</sup>दुग्धं<sup>३</sup>हीरं<sup>३</sup>पयः<sup>३</sup>समं ॥ पयस्य<sup>३</sup>मा<sup>३</sup>ज्यद  
ध्यादि<sup>३</sup>दस्यं<sup>३</sup>दधि<sup>३</sup>द्वने<sup>३</sup>तरत् ॥ ५१ ॥ दूतमा<sup>३</sup>ज्यं<sup>३</sup>हविः<sup>३</sup>सर्धे<sup>३</sup>नैवनीतं<sup>३</sup>नू<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>दुलं ॥ तनुं<sup>३</sup>हे<sup>३</sup>यंगे<sup>३</sup>वीरां<sup>३</sup>स्याच्चो<sup>३</sup>गो<sup>३</sup>दाह  
द्वंद्वं<sup>३</sup>दत्तं ॥ ५२ ॥ दंडा<sup>३</sup>हतं<sup>३</sup>कालपोयं<sup>३</sup>मरिष्टं<sup>३</sup>मधि<sup>३</sup>गेरसः ॥ तक्रं<sup>३</sup>मुद<sup>३</sup>पि<sup>३</sup>नमथितं<sup>३</sup>पादा<sup>३</sup>र्धं<sup>३</sup>बु<sup>३</sup>निर्जलं ॥ ५३ ॥ म  
रिष्टं<sup>३</sup>मस्तु<sup>३</sup>यी<sup>३</sup>ययो<sup>३</sup>भिनवं<sup>३</sup>पयः ॥ अषा<sup>३</sup>ना<sup>३</sup>या<sup>३</sup>वु<sup>३</sup>उता<sup>३</sup>सु<sup>३</sup>द्रा<sup>३</sup>सं<sup>३</sup>सुक<sup>३</sup>वलार्थकः ॥ ५४ ॥ सयो<sup>३</sup>ति<sup>३</sup>सु<sup>३</sup>यप

(9)

उको व्यास मुने की रित दत्त स्य चमने वि

॥ १८ ॥ धुप पत्ते चाट कैरः स्रपत्ते चाट कैरः वाह ॥ ककरिदुः करेदुः स्यात्कदरा क्रकरो समौ ॥ १९ ॥ वनधियः  
परुतः कोकिलः पिकरुत्यपि ॥ काकेतुं करदाः रिख वलियुष्टा सक्त्यजा ॥ २० ॥ धांही तम बोधय रभुदलि भुग्वायसा जयि ॥ २१ ॥  
कंसुका कोलो दातृहः काल कंटकः ॥ २२ ॥ अता धिचिलौ दासा यष्टौ कीर शुको समौ ॥ कुडुः कौ वीधवकः कडु शुकरा रुत  
सारसः ॥ २३ ॥ कोक पंचकः पंचक वाकोः शोभा गह्यनामकः ॥ कादंबः कलहसः स्यादुल्का पुरौ समौ ॥ २४ ॥ हंसांस्तु वेतग तुतं व  
कांगो मानसौ कसः ॥ राजहंसांस्तु वेतु चरौ लोहितैः सितैः ॥ २५ ॥ मलिनैर्मलिका र्यास्ते धार्तराष्ट्राः सिते तैरे ॥ सरा  
रिराडिराडि पंचवला का विषा कंठिको ॥ २६ ॥ हंसस्यो धिं हंसांस्तु लक्ष्मण ॥ जतुकां जिन पत्रांस्तु  
॥ २७ ॥ वर्वराणमहि कानील सरवा मधुमहिका ॥ पतंगिका पुत्तिका स्यादृषांस्तु वनमहिका  
॥ २८ ॥ वरदा ह्यो ॥ भंगारी मीरु कचिरी मलिका च समौ उमा ॥ २९ ॥ समौ पतंगाल  
॥ ३० ॥ हरेफ पुष्पलिङ्ग गवधद्वज प्ररालयः ॥ मयूरः

काका इति च

चं चरौ मलिनैस्ते हं

पतंगः बालभेषालिख भेदे वि

॥ गंगाधरपादिकात्मजे ॥ ६ ॥ पद्मविभुसाल्यसल्लोभितललीलाललललल ॥  
 ॥ भजेकुरगवातायुहरिणाजिनघोनयः ॥ ऐतोर्यमैर्यास्वमीद्यमेरास्येननुमे  
 मरुधियकावधि ॥ समररैतिहरिणांअमीअजिनघोनयः ॥ ८ ॥ कल्लसारतल्लुके  
 नवपतोहितोपवमरौमृगाः ॥ १० ॥ गंधर्वःशरैर्जोरामैःशमरौमवयैःशपोः ॥ इत्यादयो  
 ॥ ११ ॥ गुर्विविकोप्यारुविरिकालमूरिवका ॥ बुधुदरीगंधमुखीदीर्घतुंडादिवांधका ॥ १२ ॥ शरठः  
 गहगोधिका ॥ लतास्वीतिनुवायोर्लनाभमकटकाःसमाः ॥ १३ ॥ नीलांगुलुहमिःकल्लजलोकाःशतपुत्रो ॥  
 कीटःस्यादल्लिदुस्मैतुकाधिके ॥ १४ ॥ वारावतःकलरवःकयोतोऽथराशादनः ॥ पत्रीष्येनऽल्लुकेतुवायसागलिपेचके ॥  
 व्याघ्राटःस्याद्रजःखंजरीटस्तुखंजनः ॥ लोहयष्टस्तुंकैःस्यादर्थचार्यःकिंकीदिविः ॥ १५ ॥ कलिगच्छेगधुपातः  
 त्रकठठोकना ॥ १६ ॥ चरतपत्रकः ॥ दार्वावाद्यैराणालोककंपातकःसमाः ॥ १७ ॥ ककवाहंलाम्रजडकुबुटंवरणपुधः ॥

(11)

मूलकंडुमतसमोदलघतपि॥ तच्चर्मदलमाख्यातमस्यर्शमहमुच्यते॥ मृदा  
सदाहाः सैवस्फोटस्तीव्रदाहैरुपेताज्ञेयापाण्योकेषुग्रास्फिजोश्च॥ स्फोटाशपा  
वंसदाहार्निमतारु॥ स्याद्बहुव्रणो॥ सकंडुपिडकाश्चावावहश्चावाविचर्चिका॥ स्वरं स  
तदाहगगश्चावाचितंमतं॥ कपराक्षेदिष्टेनस्निग्धसकंडुमेतगोपरं॥ हिलिगंधद्वजंविद्य  
गजुकुष्ठेरोक्ष्यचजायते॥ त्वकस्वापागमहर्षश्चस्वेदस्यातिप्रवर्तनं॥ कंडुर्विप्रयकश्चैवदु  
श्चकार्कश्यपिडकोद्गमः तोदः स्फोटास्थिरत्वंचकुष्ठमांसमाश्रिते॥ कौल्यगतिद्वयोगा  
तेलिगंप्रागुक्तानित्येवच॥ नाशासंगोद्दिगागश्चक्षुःकिमसंभवः॥ स्वरोपधातश्चरवेदस्थि  
द्वल्यदुष्टशोणितश्चक्रयोः॥ यदयत्नंतर्प्यज्यांतज्ञेयंतदपिकुष्ठित॥ साध्यंत्वग्रक्तमांसस्थवातश्च  
जायं चर्चमज्जास्थिमश्रिते॥ हृमिहृदाहमंदाग्निसेयुतं तच्चिदाभाजं॥ प्रसिन्नप्रश्रुतांगचरत्तनेत्रं हतमश्रित॥ ह  
दाफा॥ प्रसिन्नप्रश्रुतांगचरत्तनेत्रं हतमश्रितं॥ पंचकर्मगुणातीतं कुष्ठं हतीहकुष्ठिनं॥ वातनकुष्ठं कापालपित्तं नौडुं वा कफा  
वक्रयाव्यवातपित्तं॥ चर्मककुष्ठकिटिहसिध्मालमविपादिकाः॥ वातश्चर्मपित्ताद्दुसतारुषी॥ पुंडरीकान्पूजिकेच  
तुकुष्ठकसेतवंश्चित्रं किलासंचारुणं सवेतनिर्दिष्टमपरिश्चावित्रिधातुद्वयमश्रयं॥ वातद्विहारापित्तात्ताम्रकमनपत्रवत॥  
हंसिकपाद्वेतेघनगुरु॥ सकंडुरत्कमाडत्कमांसमेदश्चुवादिशेत॥ वर्नेनैवेद्गुणयंकुष्ठे तद्वीतरोत्तरं॥ अमुक्तं रोमावहलं त्रसंस्ति

(12)

मृत्कानिषेवनं॥धर्मश्रमसपात्रातास्नानादिनाशितांबुसेविनां॥अजीर्णाध्यसिनांचैवपंचकर्मापचरिणां॥नवानरद्वि  
वनाम्लनिषेविनां॥मासमूलकपिष्टान्नतिलहीगुडाशिनां॥व्यवायचाप्यजीर्णनेनिद्रावसज्जतांदिवा॥विप्रान्गुरुधर्म  
मकुर्वतां॥वातादयस्त्रयोदुष्टास्तुप्रक्तेमांसमंबुच॥दूषयतिमनुष्मानांसप्रकोदयसंग्रहः॥अतःकुष्ठानिजायेते  
एतानि सप्तधा दोषैः पृथग्द्वैस्समागतैः॥सर्वेष्वपि त्रिदोषेषु व्यापदेशोधिकस्तुतः॥अतिस्रद्धापरस्पर्शस्वेदा  
दुस्तवचिस्वायत्तोदःकोठोवृत्तिःश्रमः॥अणानामधिकंशूलशीघ्रोत्पत्तिःचिरस्थितिःतृदानामपि तृटनं नि  
सृजः॥काष्म्यकुष्ठलक्षणमग्रजं॥दृष्टान्त्राणं कपालासंघट्टं पुरुषं तनु॥कपालंतोदवहुलंततकुष्ठं  
परीतलोमपिंजरां॥उद्वंशफलासामैकुष्ठमोदुवंशं च देत॥स्वितरक्तं स्थिरं स्त्यानं स्निग्धमुत्सन्नं  
दुवंशं च देत॥स्वितरक्तं स्थिरं स्त्यानं स्निग्धमुत्सन्नं मंडलं॥कुष्ठमन्योन्यसंसक्तं कुष्ठमंडलं  
वेदनं॥अथ जिह्वेव संस्थानमथ जिह्वेतदुच्यते॥सखितरक्तपर्यंतं पुंडरीकदलोपमं॥सोते  
मंचतनुचजोष्टं विमुचति॥आयेणोरसितत्सिधं अलावुकुसुमोपमं॥यत्नाकनेति  
काकनेनेव सिध्यति॥अस्वेदनमहांवस्तुयन्मत्स्यशकलोपमं॥तदेव कुष्ठं वमीरव्यं च  
दिसंस्तुतं॥देहं पाणिपादस्फुटनं तीक्ष्णवेदनं॥कंडुमडिस्मरणं श्रमं डौ



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com